विचार बिन्दु

चापलूसी तीन घृणित दुर्गुणों से बही है–असत्य, दासत्व और विश्वासघात।
–अज्ञात

दांव वाले गेम के बढ़ते बाज़ार से समाज की चिंताएं बढ़ीं

जीएसटी काउंसिल द्वारा ऑनलाइन गेमिंग पर 28 प्रतिशत का टैक्स लगा दिये जाने से ऑनलाइन गेमिंग उद्योग परेशान है। भारत में फैंटैसी ऑनलाइन गेम्स हाल के वर्षों में काफी लोकप्रिय हुए हैं जिससे इन खेलों की लत लगने को लेकर समाज में चिंताएं भी बढ़ी हैं। यह लत पश्चिम की बाज़ार की शक्तियां अपने मुनाफे के लिए लगा रही हैं। कई विदेशी कंपनियों ने भारतीय गेमिंग कंपनियों में निवेश किया हुआ है। उन्हें ही नये टैक्स को लेकर सबसे अधिक परेशानी है। आज के समय में जुआ अपने नये अवतार 'गेम' के नाम से डिजिटल जगत में उतरा है। इस नये अवतार में जुए को एक खूबसूरत नाम गेम दे दिया गया है जिससे मनोवैज्ञानिक तौर पर उसके अनैतिक होने का भान नहीं हो। उसे खेलने वालों या उसे खेलते देखने वालों के मन में कोई ग्लानि अथवा अपराधबोध नहीं हो। वैधानिक रूप से दांव लगाने पर प्रतिबंधों के होते हुए भी डिजिटल युग में वह अनेक रूप धर कर लोगों की जेबों में सेंध लगा रहा है। गेम को डिजिटल दुनिया में सबसे अधिक पैसा कमाने का जरिया भी बना दिया गया है। बाज़ार पर निगाह रखने वाली एजेंसियों का कहना है कि ऑनलाइन गेमिंग से होने वाली आय अगले दो साल में फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय से भी अधिक हो जाने वाली है। पूर्व-कोविड महामारी दौर में 2019 में फिल्म मनोरंजन से 19,100 करोड़ रुपये की आय हुई थी। उसके मुकाबले तब ऑनलाइन गेमिंग से 6,500 करोड़ रुपये कमाए गए थे। तब फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय ऑनलाइन गेमिंग की आय से लगभग तीन गुना अधिक थी। कोरोना महामारी ने फिल्म मनोरंजन की आय में 62 प्रतिशत की गिरावट ला दी। इस साल फिल्म मनोरंजन की आय पूर्व-महामारी के स्तर 19,400 करोड़ रुपये तक फिर पहुंच जाने का अनुमान है, मगर इस बीच, ऑनलाइन गेमिंग व्यवसाय का तेजी से उठाव देखने को मिला है। चालू वर्ष में इस कारोबार को 16,700 करोड़ रुपये की आय होने का अनुमान है। बाज़ार के विश्लेषक इसकी आय दो साल बाद 2025 में 23,100 करोड़ रुपये तक पहुंच जाने की उम्मीद कर रहे हैं जो उस वर्ष के फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय 22,800 करोड़ रुपये से अधिक होगी। फिल्म मनोरंजन की आय में मुख्य रूप से थिएटर रिलीज से मिलने वाला पैसा तथा ओटीटी जैसे प्लेटफॉर्म से प्रसारण अधिकार और सिनेमाघरों में होने वाली कमाई शामिल है। ऑनलाइन गेमिंग में रम्मी और पोकर जैसे सीधे-सीधे जुआ वाले गेम से होने वाली आय शामिल हैं तो ई-स्पोर्ट्स और कैजुअल गेमिंग के साथ-साथ विज्ञापन की आमदनी इसमें योगदान करती है। हाल ही में जारी फिक्की की रिपोर्ट कहती है कि जिस प्रकार ऑनलाइन गेमिंग में लोगों की रुचि बढ़ रही है उसे देखते हुए मनोरंजन के इस प्रखण्ड में 2025 तक 19.5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर देखी जा सकती है, जबकि फिल्म मनोरंजन के लिए यह वृद्धि दर 9.8 प्रतिशत पर सिमटी रहेगी। डिजिटल मीडिया और अन्य क्षेत्रों में वृद्धि के कारण समग्र मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र में 10.5 प्रतिशत की वृद्धि होने की फिक्की को उम्मीद है। दिलचस्प बात यह है कि सबसे कम वृद्धि प्रिंट प्रखण्ड में रहने की आशंका जताई गई है, जिसमें समग्र वृद्धि दर घटकर 3.7 प्रतिशत रह गई है। इस समय डिजिटल मीडिया में दांव लगाने के लिए ग्राहकों को लुभाने की मुहिम लगी है। फिल्मों और क्रिकेट के बड़े सितारों से सजे पूरे-पूरे पेज के मुखपृष्ठ विज्ञापन अखबारों में नज़र आये हैं। यह विज्ञापन एक प्रकार से गेम खेलने का निमंत्रण देते हैं, मगर अपने कानूनी तथा नैतिक बचाव में यह जरूर साथ में कह देते हैं कि रिस्क को जान कर, संभल कर खेलें। मगर कोई भी जुआ संभल कर नहीं खेला जाता। ऐसा हम पुरातन काल महाभारत काल से देखते आये हैं।

जुआ संभवत: उतना ही पुराना है जितनी कि मानव सभ्यता। भारतीय धर्म और इतिहास के अध्येता भी इस बात की ताईद करते हैं कि वैदिक काल से ही जुए को एक प्रकार का खेल माना जाता रहा है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में इसे 'द्यूत क्रीडा' की संज्ञा मिलती है। इतिहासकार कहते हैं कि दांव लगाने वाले खेलों का भारतीय इतिहास कम से कम ढाई हजार साल पुरानी सिंधु सभ्यता तक तो आसानी से देखा जा सकता है। हालांकि इस सभ्यता की लिपि अब तक नहीं पढ़ी जा सकी है परंतु उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर यह यकीन से कहा जा सकता है कि तत्कालीन सिंधु सभ्यता के निवासियों के मनोरंजन के साधनों में एक, द्यूत क्रीडा भी होता था। सिंधु घाटी के पुरातात्विक खनन में गोटियां और पासे मिले हैं जिन पर एक से छह तक की संख्याएं अंकित है। इस खेल का प्रामाणिक इतिहास वैदिक काल से ही मिल जाता है। द्यूत क्रीडा का सबसे पहला परिचय हमें ऋग्वेद में मिलता है। शास्त्रों के अध्येता द्यूत शब्द को दिव् धातु से बना बताते हैं। इसे खेलने वाले को 'कितव' कहा गया है: ''प्र व एको भिमय भूर्यागो यत्राम कितवं शशास। आरे पाशा आरे अद्यानि देवा मा माधि पुत्रे विमिय ग्रभीष्ट।'' यह खेल 'अक्ष' अर्थात पासे से खेला जाता था। इसके खिलाड़ी को इसीलिए 'अक्षद्यूत' कहा गया। पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा काशिका में अक्षक्रीड़ा के स्वरूप का पूरा परिचय मिलता है। अष्टाध्यायी में इसी शब्द का प्रयोग हुआ है। वह उसे 'आक्षिक' कहते हैं। पतंजलि ने सिद्धहस्त द्यूतकर के लिए 'अक्षिकतव' शब्द का प्रयोग किया है। ये 'अक्ष' या पासे, अक्ष-विभीतक नामक वृक्ष की लकडी से बनाये जाते थे। पासों की लकड़ी का रंग भूरा होता था। पासे मिट्टी या पत्थर के भी बनाये जाते थे। कुल 53 (त्रि पंचाशः) गोटियां होती थी। और यह खेल प्राय: तख्तों पर खेला जाता था। यह भी सभी जानते हैं कि महाभारत जैसा प्रलयंकारी युद्ध भी दांव वाले अक्ष क्रीड़ा या द्यूत क्रीडा के कारण ही हुआ था। दुनिया के अन्य कोनों में भी जुए के कई रूप प्रचलित रहे हैं। सबसे ज्यादा लोकप्रिय और पुराना पासे या गोटी से दांव लगाना ही है। नृतत्वशास्त्रियों को मिश्र के पिरामिडों में हुए उत्खनन से करीब चार हजार साल पहले इस खेल के अस्तित्व के महत्वपूर्ण प्रमाण मिले हैं । इसके अलावा पासे और गोटियां भी मिली हैं। वहां मकबरे में एक भित्तिचित्र भी मिला है, जिसमें मिस्त्र की विख्यात महारानी नेफरतिति को यह खेल खेलते हुए दर्शाया गया है। बाइबल में भी कुछ संदर्भो में जुआ खेलने के बारे में उल्लेख मिलते हैं। रोम में भी प्राचीन काल से ही जुआ खेलने के सबूत मिलते हैं।

> **यह भी ध्यान देने की बात है कि सनातन संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों में जुआ दुर्गणों के रूप में ही वर्णित है। मनु, याज्ञवल्क्य आदि नें राजाओं के लिए जो दिशा निर्देश लिखे हैं उनके मुताबिक़ जुआ राज्य के लिए वर्जित होना चाहिए। उन्होंने इसे खुलेआम-चोरी की संज्ञा दी। भारतीय शास्त्रों में तो राजाओं के लिए जुआ पूरी तरह वर्जित कहा गया है क्योंकि इससे वे पथभ्रष्ट हो सकते हैं।**

पासों के अलावा भी जुए अनेक प्रकार से खेले जाते है। जुए का अति प्राचीन स्वरूपों में से एक घोड़ों की रेस दुनिया भर में प्रचलित है। इसका अस्तित्व करीब दो हजार सालों से है। घुड़दौड़ में अरबों रुपयों का कारोबार होता है। अकेले अमेरिका में ही करीब दो सौ घुड़दौड़ ट्रैक है। मुंबई के महालक्ष्मी रेसकोर्स में घुड़दौड़ों के नियमित सत्र चलते हैं। अंग्रेजों के जमाने से लेकर आजादी के दो दशक बाद तक भारत में घुड़दौड़ लोकप्रिय थी, मगर बाद में दूसरे मनोरंजन के साधनों के आगे यह पिछड़ गई। इसके अलावा दांव लगा कर बैलों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई और बुलफाइटिंग जैसे खेल भी जुए की श्रेणी में ही आते हैं। ऐसे ही कैसिनो मशीनें भी होती हैं जिन पर दांव लगाए जाते हैं। ज्यादातर लोकप्रिय सरकारें इस द्यूतक्रीड़ा का आयोजन खुद नहीं करती बल्कि लाइसेंस के जरिए कैसिनो का कारोबार निजी क्षेत्र को सौंप देती हैं और फिर टैक्स के जरिए कमाई करती हैं। कैसिनो में भी जुए के कई रूप प्रचलित हैं। मगर कैसिनो नाम से पहले दिमाग में रोलेट ही कौंधता है जिसमें गोटी के साथ एक चक्र घूमता है। और भी कई खेल हैं, जो मशीनों से खेले जाते हैं। ताश के पत्तों के भी ऑनलाइन गेम मौजूद है। कुछ समय पूर्व तक सरकारें कमाई करने के लिये लॉटरियों का जुआ चलाती थीं और उनके टिकट बेचती थी। राजस्थान में तो अल्प बचत विभाग में लॉटरी के लिए विशेष रूप से अलग व्यवस्था थी। पहले लॉटरी के मॉसिक ड्रॉ खुलते थे, फिर साप्ताहिक हुए, उसके बाद दैनिक ड्रॉ ने जोर पकड़ा। भारत में लॉटरी का दुखद पक्ष दैनिक ड्रॉ के बाद ही सामने आया। रातों-रात लखपति बनने की चाह में लाखों लोग इसके पीछे पागल हो गए। हजारों घर बर्बाद हो गए। लॉटरी के दुष्चक्र में फंसकर खुदकुशी करने वालों की तादाद भी हजारों में होगी। इसी कारण भारत में लाटरी बैन कर दी गयी।

यह भी ध्यान देने की बात है कि सनातन संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों में जुआ दुर्गणों के रूप में ही वर्णित है। मनु, याज्ञवल्क्य आदि नें राजाओं के लिए जो दिशा निर्देश लिखे हैं उनके मुताबिक़ जुआ राज्य के लिए वर्जित होना चाहिए। उन्होंने इसे खुलेआम-चोरी की संज्ञा दी। भारतीय शास्त्रों में तो राजाओं के लिए जुआ पूरी तरह वर्जित कहा गया है क्योंकि इससे वे पथभ्रष्ट हो सकते हैं। भले ही सदियों से उत्तरी भारत में दिवाली के त्यौहार पर जुआ खेलना कर्मकांड जैसा बना हुआ नज़र आता है किन्तु भारतीय शास्त्रों में तो इसे हमेशा बुरा ही बताया गया है। महाभारत के उद्योग पर्व में कहा गया है: 'अक्षद्यूतं महाप्राज्ञ सतां मति विनाशम्। असतां तत्र जायन्ते भेदाश्च व्यसनानि च।' अर्थात द्यूत समान कोई पाप नहीं। यह समझदार की बुद्धि का नाश कर देता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

हास्य अभिनेताओं की महिमा (व्यंग)

महावीर सिंह

प्रसिद्ध हास्य अभिनेताओं के सहारे कई टीवी चैनल्स से हर रोज कम से कम एकाध, हंसा-हंसा कर लोटपोट करने वाला शो दिखाते हैं।

हास्य अभिनेताओं को अचानक अन्यत्र दूसरे देशों के बड़े चैनल्स पर शो दिखाने का मौका मिलता है तो देश से बाहर चले जाते है।

जैसे अभी हाल ही में एक प्रसिद्ध हास्य कलाकार--, क्या नाम है--- कोई शर्मा जी--कई दिनों के लिए बाहर देश चले गए तो भक्तों का तो बुरा हाल हो गया, खाना पीना ही भूल बैठे--- चेनल, विज्ञापन वालों का भी करोड़ों का नुकसान--

सही में कइयों से कोई एक हास्य कलाकार ऐसा भी होता है कि उसके भक्तों--प्रशंसक उसे लगभग देवता की श्रेणी में मान नें लग जाते हैं --उसके हास्य को भी भक्त लोग ब्रह्मस्तय मानने लगते हैं --

इसी प्रकार हमारी कहानी के हास्य अभिनेता से भी उन चैनल्स वालों नें कुछ इस प्रकार से अनुनय-विनय किया-- - मालिक, आपकी गैरहाजरी से धन्दा चौपट होने की कगार पर आ जाता है। दर्शक घट जाते हैं, टीआरपी एवरेस्ट की चोटी से धरातल पर आ जाती है।

मजे हुए अभिनेता नें दूर देश से ही इशारा कर दिया--लोट के आते ही, अगले 5, 7 दिन सुबह उठने के साथ से, लोग रात को सोयें तब तक शो दिखाया करूंगा, नुकसान से कई गुना ज्यादा की कमाई हो जाएगी--तैयारी पूरी रखना-- भक्तों को इशारा कर देना। आखिर मेरे बिना तुम जीरो, तुम्हारे बिना मैं भी तो फ़कीरो।

बात के पक्के अभिनेता नें जैसे ही देश की धरती पर पैर रखता है वादा निभाना शुरू कर देता है। चैनल्स की बल्ले-बल्ले शुरू और कमाई पहले से ज्यादा।

एक समीक्षक टाइप के आदमी नें दो-चार चैनल्स वालों से पूछ लिया, खयों भाई, एक ही अभिनेता पर इतना क्यों निर्भर रहते हो--हास्य अभिनेताओं की कमी है क्या? ढूंढो एक मिलेंगे हजार, एक से एक बढ़ कर।

सैंकड़ों की संख्या में मिल जाएंगे विभिन्न हास्यपूर्ण नामों वाली पोलिटिकल पार्टीज में। धर्म की आड़ में चल रहे अधार्मिक संगठन में तो इनकी भरमार है जो हास्य के साथ साथ लठबजी, तलवारबाजी में भी निपुण होते है। जैसे कोई कहता है हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं--कोई दूसरा कहता है कि ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ वगैराह वगैराह---कोई बात बात में किसी को भी पड़ोसी मुल्क में भेजने की बात करने लगता है, कई 70 साल पहले क्या हुआ, बताने लगता है तो कई तो सतयुगीन भूतकाल की अद्भुत गाथाओं में खो जाते हैं---कोई कमी नहीं है ऐसे महान हास्य कलाकारों की।

अखबारों, चैनल्स के विज्ञापनों में भी विज्ञापन दाताओं और मीडिया वालों का गूढ़ हास्य ही तो छिपा होता है। मीडिया वाले भी पक्की पकाई खाना चाहते है, खोजबीन को बाई बाई।

आजकल अखबारों, टीवी चैनल्स पर कई सरकारों के एक-एक, दो-दो पेजों के विज्ञापन हर रोज आ रहे है जिसमें अगले 3, 4 माहिने में कई प्रदेशों को स्वर्ग बनाने के वादे है--चार साल चाहे जनता से मिले भी नहीं हो--क्या इसमें हास्य नहीं दिखता?? दिखता है किंतु विज्ञापन दाताओं की थैली दिमांगों पर ताले लगा देती है जी --

समीक्षक कहता गया--इन पोलिटिकल पार्टीज व छद्म धार्मिक संगठनों में बाकायदा बेहतरीन हास्य कलाकार तैयार कर आगे बढ़ाए जाते हैं। रात ओर दिन हास्य कला की नवीनतम शिक्षा दी जाती है, वर्जिश करवाई जाती है। अखबार वालों, टीवी चैनल्स वालों को उनकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए।

कुछ दूसरे नए, उभरते और कलाकारों को मौका देना चाहिए, उनकी भी थोड़ी बहुत तो दुकान चले--आपके साथ साथ व आपके सहयोग से।

समीक्षक कहता गया--झूठ के तड़के वाला हास्य ही ढूंढना हो तो सोशल मीडिया भरा पड़ा है, आजकल चुनाव के समय सरकारों, नेताओं द्वारा दिये जाने वाले विज्ञापन भरे पड़े है। मीडिया वाले करें थोड़ी मेहनत, निकालें इन में से भरपूर हास्य।

ओर तो ओर, कई बार तो बड़े-बड़े सदनों में जो बड़ी सभाएं जुड़ती है, बहस होती है, वहां भी हास्य ही हास्य दिखने लगता है। खबरनवीस थोड़ी मेहनत करें तब न!!!

चेनल वाले भी मजे हुए कलाबाज थे, बात को घूम कर वहां ले गए जहां से शुरू हुई थी और बोले, बात तो आपकी ठीक है। हास्य कलाकारों, हास्य की कमी नहीं किन्तु जब लोग जोनीवाकर, महमूद, जगदीप, मुकरी को ही देखना चाहते है तो रामपाल को तो ईतजार करना ही पड़ेगा।

छोटे-मोटे पार्टी प्रवक्ताओं, तथाकथित धर्म का चोला पहने संगठनों के प्रवक्ताओं को कोई क्या ओर क्यों सुनेगा जब सबसे बड़ा हास्य अभिनेता मनोरंजन के लिए सदैव सर्वत्र सहज उपलब्ध हो।

वैसे रामपाल और उसके समवय दोस्त भी हास्य कला के निपुण खिलाड़ी है किंतु वे लोग लम्बा शो नही दिखा सकते, चुटकले टाइप छोटे-छोटे शो तो बहुत बढ़िया करते है। जनता अभ्यस्त हो गई बड़े शो देखने की।

दूसरे गम्भीर समीक्षक नें अपनी नाक आगे निकल कर कहा लम्बा शो दिखाने वालों, फेंकने वालों से भी लोग उब जाते है, चैनल्स बदलने लगते हैं। इसलिए दूसरों को भी कलाकारी दिखाने का मौका दो। कम से कम दो चार को तो तैयार करो जो इमरजेंसी जैसी स्थिति में काम आ जाएं।

चेनल वाले बोले, पिक्चर हाल में तालियों की गड़गड़ाहट तो जोनी वाकर, महमूद, जगदीप, मुकरी ओर वो जो गुजरात के कौन है रावल जी या ओर ----उनको ही मिलती है। समीक्षक तो बाद में लिखते रहते हैं कि पिक्चर इस या उस प्रमुख कलाकार की वजह से ही हिट हुई किन्तु तत्काल ताली तो हास्य अभिनेता को ही मिलती है। नाचे गए बन्दरी (मख्य किरदार), खीर खाए फकीर (हास्य किरदार)।

अगर मुख्य कलाकार कुछ गलत-सलत बोल दे तो सारा खेल बिगड़ जाता है और हास्य कलाकार सैंकड़ो सालों के अलग-अलग समय के पात्रों को एक साथ बैठा कर गम्भीर धार्मिक संवाद भी करवा दे, लंका विजय और महाभारत एक काल में भी करवा दे, बात-बात में लाखों के बजाय करोड़ों को खुशहाल कर दे,-(चाहे दूसरे मुल्कों से ही आयातित करने पड़ें), आंख झपकने के साथ दूध की नदियां बहा दे, कंकर की जगह पहाड़ लोगों के गले उत्तर दे --वैसे भी परसाई जे नें कहीं लिखा है आत्म विश्वास धन, विद्या, बल का भी होता है किंतु सब से बडा आत्मविश्वास नासमझी का होता है।

तो भी लोग बड़ा दिल रख कर कह देते है---तो, इतना तो चलता है, आखिर इन लोगों को भी सुबह से शाम कितना काम करना पड़ता है!!!! किसी डायलॉग में गलती हो गई तो क्या पिक्चर देखनी बंद कर दें।

जो ऐसी बात भी कहे दे जिसका सिर पैर न हो और उस पर भी लोगों से हंस कर ताली पीटवा ले, वही महानतम हास्य कलाकार है।

एक मुफ्त की सलाह देने वाले नें भी सलाह दे डाली--1, 2 साइड हास्य कलाकरों को तो कला प्रदर्शन का मौका तो मिलता रहना चाहिए। इमरजेंसी कभी आ सकती है। अगर जनता को एक के ही हास्य अभिनेता के शो देखने की लत लगाओ गे तो देर-सवेर नुकसान का भी खतरा हो सकता है।

जनता का क्या, कब मूड बदलने का ठान ले और ऐसा हुआ तो कई चैनल्स पर तो परमानेंट पर्दा लग सकता है।

एक ठेठ अनाड़ी व्यक्ति नें उनकी बात की हामी भरते हुए कहा--यह साहब भी बात तो ठीक कह रहे है--पहले भी कई ऐसे शो हाउसफुल चलते-चलते अचानक औंधे मुंह गिरे है। पुरानी मारवाड़ी कहावत है, पुराने जमाने के परिवेश में जैसे शब्द चलते थे वैसे काम में लिए है (इसलिए कोउ बहन नाराज न हो)----"बिना मोरी और बिना जीन की ऊंटनी,, बिना मुंह बंद किए बोरी-बोरा-सलिता, नाते से आई पटरानी और जनता किसी की सगी नहीं"

इसलिए हे चेनल वालो, अखबार वालो, आज छोटे दिखने वाले हास्य कलाकरों की भी कदर करते रहोगे तो फायदे में रहोगे---आज के कुछ अति प्रसिद्ध हास्य कलाकारों को भी यह जुमला काम में लेते सुना होगा----/कायदे में रहोगे तो फायदे में रहोगे–

"न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर"---आनंद लो मस्त रहो।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

कोटा की बेटी ने 10 देशों की सर्फिंग प्रतियोगिता में कीर्तिमान बनाया

कोटा, (निसं)। अंतरराष्ट्रीय सर्फिंग ओपन प्रतियोगिता का आयोजन भारत में पहली बार मामल्लापुरम में 14 से 20 अगस्त तक किया गया। यह प्रतियोगिता विश्व सर्फिंग लीग का हिस्सा है। यह प्रतियोगिता खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में तमिलनाडु सरकार का एक और बढ़ ता कदम है। इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता से भारतीय खिलाड़ियों को अपनी क्षमता दिखाने का मौका मिला। जिसमें कोटा की स्टेशन क्षेत्र स्थित जेएन मार्शल निवासी गर्विता बल्दुआ ने सर्फिंग में बेहतरीन प्रदर्शन कर इतिहास रच दिया है। वर्तमान में वह बैंग्लोर स्टार्टअप में क्योर स्कीन में सीनियर प्रोडक्ट मैनेजर हैं। राजस्थान में वह इकलौती इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली युवती थी जिन्होंने समुद्र की लहरों पर अपने खेल कौशल से सभी को रोमांचित कर दिया। वह इससे पूर्व पंडिचेरी, वरकला, उड़पी, महाबली परम में सर्फिंग कर चुकी हैं।

■ गर्विता ने समुद्र की लहरों पर सर्फिंग के सफर में सहरानीय प्रदर्शन

कोटा की बेटी गर्विता ने सर्फिंग में बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

10 देशों ने लिया था भाग, गर्विता का प्रदर्शन रहा सराहनीय:-गर्विता बल्दुआ ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता हमारे खिलाड़ियों को अपनी क्षमता दिखाने और हमारे देश को गौरवांवित करने का शानदार मंच है। अंतरराष्ट्रीय सर्फ ओपन प्रतियोगिता में 10 देशों के 100 खिलाड़ी हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता की कुल इनामी राशि 45 हजार डॉलर है। इसमें एशिया और ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। गर्विता ने बताया कि वह टॉप 6 में रही। इस प्रतियोगिता में मलेशिया, जापान, सिंगापुर, भारत, आस्ट्रेलिया, मालदीप, श्रीलंका सहित अन्य देश थे। गर्विता ने बताया कि समुद्र में हर दिन कुछ नया होता है, लहरों का वेग और उतार-चढ़ ाव बदलता है तो हवाओं का रुख भी इस खेल को प्रभावित करता है, लेकिन यह खेल संयम, बैलेंस और एकाग्रता सिखाता है, साथ ही सघर्ष, कडी मेहनत और समुद्र के विशालकाय स्वरूप में अपने आप को संभालने की हर तहर से तैयार होने की प्रेरणा देता है। इस प्रतियोगिता की सफलता पर उन्हें 30 हजार का पुरस्कार भी दिया गया।

सरकारी विद्यालय बना अनुशासन की मिसाल

चूरू, (कासं.)। आपाधापी और भाग-दौड़ के इस युग में एक शिक्षक दंपती के एक अनूठे नवाचार ने सरकारी विद्यालय को अनुशासन बनाए रखने की एक मिसाल बना दिया है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण प्रेमी शिक्षक दंपती अमरसिंह किशनावत और मनीषा चारण के सौजन्य से 'अनुशासित रहो ईनाम पाओ' कार्यक्रम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बुधवाली में लगातार तीसरे सत्र में भी जारी है। पर्यावरण प्रेमी शिक्षक अमरसिंह किशनावत और मनीषा चारण की ओर से कार्यक्रम का शुभारंभ 25 नवम्बर 2021 को प्रधानाचार्य गिरधारी लाल स्वामी के द्वारा किया गया था। स्वामी के अनुसार इस कार्यक्रम में अनुशासित रहने वाले विद्यार्थियों को रजिस्टर, पेन, डिक्शनरी, सामान्य ज्ञान पुस्तक, स्लेट, पेंसिल आदि से पुरस्कृत किया जाता है। पिछले दो सत्रों और इस सत्र में अभी तक 350 से अधिक विद्यार्थियों को पुरस्कार दिया जा चुका है। जिले के सरकारी और निजी विद्यालयों में चल रहे

■ तीन वर्ष से चल रहा है 'अनुशासित रहो इनाम पाओ' कार्यक्रम

अमरसिंह किशनावत

मनीषा चारण

अनेकों नवाचारों में यह एक अद्वितीय नवाचार है, जिसमें रोजाना प्रार्थना सत्र में पुरस्कार देकर विद्यार्थियों को अनुशासित रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किशनावत के अनुसार इस अनूठे नवाचार का उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना का विकास करना और शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ना है। प्रधानाचार्य गिरधारी लाल स्वामी ने बताया कि अनुशासित रहो ईनाम पाओ कार्यक्रम से विद्यार्थियों के अनुशासन में आशातीत सुधार हुआ है, साथ ही विद्यालय की समस्त शैक्षणिक और सहशैक्षणिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की अभिरूचि विकसित हुई है। पर्यावरण प्रेमी शिक्षक दंपती अमरसिंह किशनावत और श्रीमती मनीषा चारण की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को सम्मान आपके द्वार के तहत उनके घर जाकर सम्मानित किया जाता है।

106 साल पुराने तीन दिवसीय श्रावणी झूला महोत्सव का समापन

लालसोट, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के डिडवाना ग्राम पंचायत मुख्यालय पर चल रहे 106 साल पुराने श्रावण झूला महोत्सव का मंगलवार को विधिवत समापन हुआ।

तीन दिवसीय इस श्रावणी झूला महोत्सव में बाहर से आए हुए कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की छटा बिखेर कर आने वाले दर्शकों को भावविभोर किया गया। झूला महोत्सव आयोजन कमेटी से जुड़े राकेश सामोत्या ने बताया कि इस तीन दिवसीय झूला महोत्सव के दौरान स्थानीय युवाओं, ग्रामीणों की टोलियां द्वारा लगातार

लालसोट के डिडवाना ग्राम में आयोजित झूला महोत्सव समापन कार्यक्रम में उमड़ी श्रोताओं की भीड़।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान जमा होने वाली भीड़ पर नियंत्रण रख कर इस कार्यक्रम को शांतिपूर्वक संपन्न कराया गया। वहीं तीन दिवसीय झूला महोत्सव के शांतिपूर्ण संपन्न होने के बाद आयोजन कमेटी से जुड़े लोगों द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

■ तीन दिन हुए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्राचीन काल में जब स्थानीय तौर पर व्यवसाय नहीं होने के कारण लालन-पालन के लिए ज्यादातर लोग कहीं दूर चले जाती थे। जहां बाहर व्यवसाय से सावन माह में ही लोग वापस लौटते थे एवं एक जगह लंबे समय से मिलने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम झूला महोत्सव का आयोजन कर स्नेह मिलन आयोजित करते थे। वहीं वर्षों पुरानी इस झूला महोत्सव की परंपरा को आज भी ग्रामीण निभाते चले आ रहे। इस दौरान आयोजन समिति के राकेश सामोत्या, राकेश मेडिवाला, सीताराम सोनी, सूरजमल गुप्ता, मुरारी पाटीवाला, मुरारी सोनी, भागीरथ सोनी, हनुमान शर्मा, प्रकाश, गंगा सहाय मुरारी, प्रकाश चोपड्या, पंडित हेमु, शिवान्स गुप्ता, चोंथमल गुप्ता, मन्नू सोनी, प्रकाश पाटीवाला, अंगद, काल्या नापित, राममनोहर गुप्ता एवं ग्रामीण मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 30 अगस्त, 2023

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 8:47 तक, अतिगंड योग रात्रि 9:32 तक, वणिज करण दिन 10:59 तक, चन्द्रमा आज दिन 10:19 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

राजयोग दिन 11:54 से रात्रि 8:47 तक है। भद्रा दिन 10:59 से रात्रि 9:02 तक है। बुध अस्त पश्चिम दिन 2:41 पर होगा। आज चान्द पूर्णिमा व्रत है। आज रक्षाबन्धन, हपग्रीव जयन्ती, नारेली पूर्णिमा, वलभद्र पूजा है। पंचक दिन 10:19 से आरम्भ होगा। आज रक्षाबन्धन रात्रि 9:02 के पश्चात मनाया जायेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:18 तक, शुभ 10:53 से 12:27 तक, चर 3:37 से 5:12 तक, लाभ 5:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:47

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
धार्मिक-मांगलिक धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
परिजनों का व्यवहार अच्छा रहेगा। भावनात्मक कारणों से मन:स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से अस्त-व्यस्त दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।